Dr Kaushal Kumar
B.A. I
Eco-II

Q. व्यावसायिक बैंकों के सिद्धान्त एवं प्रमुख कार्यों की विवेचना करें।

Ans:— व्यावसायिक बैंक एक लाभ कमाने वाली संस्था (profit seeking institution) है। ये बैंक अपने ग्राहकों से जमा प्राप्त कर उसे व्याज देते हैं तथा प्राप्त जमा को विभिन्न क्षेत्रों में विनियोग अथवा ऋण देकर आय अर्जित करते हैं। इन दोनों का अन्तर ही प्रायः व्यावसायिक बैंकों का लाभ होता है। अतः व्यावसायिक बैंकों के मुख्यतः दो उद्देश्य हैं!—

1) अपने हिस्सेदारों के लिए अधिकतम लाभ कमाना; तथा
2) अपने ग्राहकों के हितों की रक्षा करना तथा उनके मांगने पर नकद रकम का भुगतान करना।

जहाँ तक पहले उद्देश्य का सम्बंध है कोई बैंक अपने साधनों का लाभप्रद तरीके से विनियोग कर अथवा उनका उचित एवं लाभप्रद वितरण करके ही अपने हिस्सेदारों के लिए अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकता है। अपने साधनों के विनियोग से बैंक की जितनी ही अधिक आय प्राप्त होगी, उसका मुनाफा भी उतना ही होगा।

लेकिन बैंक को अपने दूसरे उद्देश्य पर भी बराबर ध्यान रखना होता है। बैंक को यह देखना होता है कि वह अपने साधनों का इस प्रकार विनियोग करे कि किसी समय ग्राहकों के मांगने पर नकद रकम का भुगतान कर सके। बैंक के दोनों उद्देश्यों में परस्पर विरोध पाया जाता है। इसका कारण यह है कि बैंक अधिक मुनाफा तभी कमा सकेगा जब प्राप्त जमा में से अधिक से अधिक रकम का विनियोग करे। लेकिन ऐसा करने से बैंक के नकद कोष में कमी होगी और साधनों की तरलता (Liquidity) कायम नहीं रख सकेगा।

व्यावसायिक बैंकों के सिद्धान्त principle of Commercial banks अथवा व्यावसायिक बैंकों के विनियोग के सिद्धान्त (principles of investment of Commercial banks)

व्यावसायिक बैंकों को विभिन्न क्षेत्रों में अपने साधनों का वितरण करते समय अथवा साधनों का विनियोग करते समय कुछ सिद्धान्तों का अनुसरण करना पड़ता है, जिन्हें व्यावसायिक बैंकों का सिद्धान्त कहा जाता है। इन्हें व्यावसायिक बैंकों की विनियोग नीति (Investment policy of commercial banks) भी कहते हैं। ये सिद्धान्त निम्न लिखित हैं!—

1) साधनों की तरलता (Liquidity of Assets)!— व्यावसायिक बैंकों का मुख्य उद्देश्य अपने हिस्सेदारों के लिए अधिकतम लाभ कमाना है। बैंक अपने साधनों के विनियोग करके लाभ कमाता है लेकिन इसके लिए यह आवश्यक है कि स्वयं बैंक का अस्तित्व बना रहे। किसी भी बैंक का अस्तित्व जनता के विश्वास पर निर्भर करता है। जनता जो भी रकम बैंक में जमा करती है उसे नकद मुद्रा की तरह समझती है। अतः बैंक में जनता का विश्वास तभी तक बना रहेगा जब तक वह अपनी मांग पर नकद मुद्रा देने की क्षमता रखेगा। अतः जमा के बदले बैंक द्वारा नकद मुद्रा की मांग को पूरी करने की क्षमता को ही तरलता कहते हैं। (Liquidity is the ability of a bank to satisfy demands for cash in Exchange for deposites.

ii) लाभदायकता (profitability):— बैंकों को अपने साधनों का वितरण इस प्रकार करना चाहिए ताकि वह अधिक से अधिक लाभ अर्जित कर सके। हम देख चुके हैं कि नकद जमा से बैंक को कुछ भी लाभ नहीं होता तथा अभियाचित या अल्पकालीन ऋण (Loans and Call and short Notice) से बैंक को नाम मात्र का लाभ होता है क्योंकि इन पर व्याज की दरें बहुत कम होती हैं। अतः बैंक को अपना बाकी धन इस प्रकार के साधनों में लगाना चाहिए जिनसे उसे अच्छी आय प्राप्त हो सके।

iii) साधनों की सुरक्षा (Safety of Assets)!— बैंक को अपने धन का विनियोग करते समय तरलता एवं लाभदायकता के साथ-साथ साधनों की सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, बैंक को इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि विनियोग किया जानेवाला धन सुरक्षित रहे। बैंक को अधिक जोखिम वाले विनियोग में धन नहीं लगा कर कम जोखिम वाले विनियोग में धन लगाना चाहिए। ऐसा नहीं करने से बैंक कभी भी संकट में पड़ सकता है।

(iv) **जोखिम की विविधता** (Diversification of Risk) बैंक अपना धन विभिन्न प्रकार के निवेशों में लगाकर रखता है। बैंक के विनियोग में विविधता का होना

Dr. Kaushal Kumar
B.A. I
Eco- II

आवश्यक है, और उसे अपना तमाम धन एक ही प्रकार के ऋण, प्रतिभूतियों व्यवसायों अथवा उद्योगों में नहीं लगाना चाहिए। यदि बैंक अपने समस्त धन को एक ही प्रकार के उद्योग या व्यवसाय में लगा देता है, और वह उद्योग या व्यवसाय फेल कर जाता है तो बैंक भी फेल हो जायेगा। अतः बैंक को विविध प्रकार के विनियोग में धन को लगाना चाहिए। इससे जोखिम में विविधता आती है और जोखिम से बचने के लिए रास्ते खुले रहते हैं।

⟨V⟩ प्रतिभूतियों की विक्रयशीलता (Marketability of securities)

बैंकों को वैसी प्रतिभूतियों में धन लगाना चाहिये अथवा वैसे माल के आधार पर ऋण देना चाहिए जिन्हें आसानी से बाजार में बेचा जा सके अथवा प्रतिभूतियों का केन्द्रीय बैंक से बट्टा कराया जा सके। इस दृष्टिकोण से सरकारी प्रतिभूतियों, प्रथम श्रेणी के बिलों, अच्छी कम्पनीयों के हिस्से एवं ऋण-पत्रों तथा नकद साख इत्यादि में धन लगाना बेहतर होता है क्योंकि इनमें क्रियाशीलता का गुण पाया जाता है। दूसरे शब्दों में इन्हें बाजार में बेचकर कभी भी धन प्राप्त किया जा सकता है। अतः बैंक को प्रतिभूतियों की क्रियाशीलता पर ध्यान रखना चाहिये।

⟨VI⟩ निवेशों की कीमतों में स्थिरता (Stability in the prices of Investments)

– व्यवसायिक बैंकों को अपने धन का निवेश अथवा विनियोग ऐसी वस्तुओं एवं प्रतिभूतियों में करना चाहिए जिनके मूल्यों में अपेक्षाकृत अधिक स्थिरता रहती हो। यदि बैंक अपने धन का विनियोग ऐसी वस्तुओं एवं प्रतिभूतियों में करता है जिनकी कीमतों में स्थिरता नहीं है तो इन वस्तुओं एवं प्रतिभूतियों की कीमतों में अचानक कमी होने से बैंक को काफी हानि का सामना करना पड़ सकता है।

⟨VII⟩ विनियोग की उत्पादकता (productivity of investment)

:– बैंक को अपने धन का विनियोग ऐसी जगह करनी चाहिए जहाँ यह निश्चित हो कि उसके द्वारा दी गई रकम उत्पादन के कार्य में लगायी जायेगी तथा उससे उत्पादन में वृद्धि होगी। ऐसा करने से बैंक का धन सुरक्षित रहता है।

⟨VIII⟩ निवेश की कर मुक्ति (Exemption of Investment from Taxes)

:– बैंक को अपना धन, यथा सम्भव ऐसी प्रतिभूतियों में लगाना चाहिए जो आय कर अथवा दूसरे करों से मुक्त हो। ऐसा करने से बैंक की आय में अधिक वृद्धि की जा सकती है।

⟨IX⟩ केन्द्रीय बैंक की विनियोग नीति का अध्ययन (Study of Investment policy of the Central bank)

:– यदि बैंक अपने विनियोग को लाभदायक एवं सुरक्षित रखना चाहता है तो उसे चाहिये कि केन्द्रीय बैंक की विनियोग नीति का अध्ययन कर उसके निर्देशों के अनुसार धन का विनियोग करे। ऐसा करने से संकटकाल में केन्द्रीय बैंक से आसानी से सहायता भी प्राप्त की जा सकती है।

⟨X⟩ राष्ट्रीय हित National Interest

:– ऊपर वर्णित बैंक की विनियोग नीतियाँ उसकी आय एवं साधनों की सुरक्षा से सम्बन्धित हैं, लेकिन बैंक केवल लाभ कमाने वाली संस्था ही नहीं बल्कि देश के आर्थिक विकास में योगदान भी उनका कर्तव्य है। राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिये तो यह जिम्मेवारी और बढ़ जाती है, अतः बैंकों को विनियोग करते समय देश के आर्थिक विकास एवं राष्ट्रीय हित को भी ध्यान में रखना चाहिए।